चातुर्मासिक चतुर्दशी पर कार्यक्रम

चातुर्मास में हो ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की आराधना : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 24 जुलाई, 2010

आचार्य महाश्रमण ने 251वें तेरापंथ स्थापना दिवस के त्रिदिवसीय कार्यक्रम के दूसरे दिन चातुर्मासिक चतुर्दशी पर कहा कि साधु समाज के लिए वर्ष को दो भागों में बांटा गया – वर्षाकाल और शेषकाल। शेषकाल में साधुगण ग्रामानुग्राम विहार करते हैं और चातुर्मास में वे एक स्थान पर रहकर साधना करते हैं। यहां जैन दर्शन के अनेकांत सिद्धांत का प्रयोग किया गया है। विहारचर्या साधु के लिए वरदान है। साधु को एक जगह जमकर नहीं बैठना चाहिए। इसलिए जैन धर्म में वर्षावास काल में एक जगह रहकर साधना करने का विधान है और शेषकाल में विहारचर्या का विधान है।

उन्होंने साधु-साध्वी समाज एवं श्रावक समाज से चातुर्मास में मिलने वाले समय का अध्यात्म विकास में नियोजित करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि चातुर्मास में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की विशेष आराधना होनी चाहिए। ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिसके करने के बाद अनुताप हो। उन्होंने ज्ञान योग, भक्ति योग एवं कर्मयोग की चर्चा करते हुए कहा कि तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य जयाचार्य द्वारा 24 तीर्थंकरों की स्तुति में रचित चौबीसी भक्तियोग में डूबाती है और तत्त्व का ज्ञान कराती है। चतुर्मासकाल में यहां बहिर्विहार में विचरण करने वाले साधु साध्वियां चौबीसी को कंठस्थ कराने पर विशेष ध्यान दें।

आचार्य महाश्रमण ने बच्चों के संस्कार निर्माण हेतु सम्पूर्ण भारत में चलने वाली ज्ञानशालाओं में महिला मण्डल के योगदान की सरहाना करते हुए कहा कि ज्ञानशाला एक फलदायी उपक्रम है। इसमें जैन विद्या का भी अध्ययन करवाया जाता है। प्रशिक्षण में महिला मण्डल बहुत अच्छा कार्य कर रही है। तेरापंथ युवक परिषद भी व्यवस्थाओं से जुड़ी हुई है। चातुर्मास में ज्ञानशालाओं का व्यवस्थित संचालन होता रहे, जिससे भावी पीढी में संस्कार निर्माण हो। उन्होंने बाल संतों को संघ की भावी संपदा बताते हुए कहा कि बाल मुनियों का स्वाध्याय पर विशेष ध्यान देना है।

बारहव्रती श्रावक बनने की प्रेरणा देते हुए आचार्य महाश्रमण ने कहा कि श्रावक श्राविकाओं को साधु-साध्वियों से बारह व्रतों को समझना चाहिए। जिस तत्त्व को जान लेने के बाद स्वीकार किया जाता है तो उसका महत्त्व ज्यादा हो जाता है। इस वर्ष विशेष तौर बारह व्रती श्रावकों के निर्माण पर ध्यान दिया जाये। उन्होंने तपस्या का क्रम निरंतर चले इस ओर भी ध्यान देने की जरूरत बताई, साध्वी आरोग्यश्री ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमार ने किया।

आचार्यों के इंगित को बहुमान देना तेरापंथ में सामान्य बात : आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण ने चातुर्मासिक पक्खी पर हाजरी वाचन कराते हुए कहा कि तेरापंथ आचार्य भिक्षु द्वारा निर्मित पांच मौलिक मर्यादाओं पर टिका है। तेरापंथ में आचार्यों के इंगित को बहुमान देना सामान्य बात है और ये सामान्य बात ही रहनी चाहिए। जो इंगित को बहुमान नहीं देता है तो विशेष बात हो जाती है और यह विशेष बात तेरापंथ में स्वीकार नहीं है। उन्होंने आचार्य के इंगित का समझकर सेवा करने वाले अनेक साधु-साध्वियों की सरहाना करते हुए कहा कि जो साधु आचार्य के इंगित को बिना अनुनच के स्वीकार करता है वह साधुवाद का पात्र है। इस मौके पर उन्होंने साधु-साध्वियों को मर्यादाओं का पुनरावर्तन करवाया।

आचार्यश्री महाश्रमण से कांठा प्रदेशवासियों ने की पूरजोर अर्ज

आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में राजस्थान के पाली जिला मारवाड़ के कांठा प्रांत के निवासी बैंगलोर प्रवासी मूलचन्द नाहर, ललित जैन, मांगीलाल छाजेड़, मारवाड़ (पाली जिला) के विधायक केशाराम के नेतृत्व में लगभग साठ व्यक्तियों का एक दल आया। उन्होंने राजसमन्द जिले के केलवा पधारते समय कांठा प्रांत में पधारने की पूरजोर अर्ज की। अर्ज के प्रत्युतर में आचार्यश्री महाश्रमण ने केलवा यात्रा के बाद कांठा प्रांत में पधारने की घोषणा की।

इस अवसर पर मूलचन्द नाहर आचार्यश्री महाश्रमण को कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी द्वारा वर्ष 2000 से 2010 तक किये गये कार्य की रिपोर्ट का एलबम फोटो सहित भेंट किया। कर्नाटक जीवन विज्ञान अकादमी के मंत्री ललित जैन ने कांठा प्रांत में पधारने पर अपनी योजनाएं प्रस्तुत की जिसमें मोहनलाल गादिया, धर्मीचन्द धोखा, नरेन्द्र रायसोनी आदि सम्मलित है। मोहनलाल गादिया पाली जिले के रामसिंह गुडा ग्राम के आचार्य तुलसी विद्या निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय को क्रमोन्नतर इसी वर्ष प्रारंभ करने की जानकारी दी।